


---

# Devaihkrita Shiva Stuti

——  
**देवैःकृता शिवस्तुतिः**

——  
**Document Information**



---

Text title : Devaihkrita Shiva Stuti

File name : devaiHKRRitAshivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | shivAkhyaH chaturthAMshaH | adhyAyaH 14 | 38-39, 45-49||

Latest update : August 20, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 20, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



देवैःकृता शिवस्तुतिः



श्रीवामदेव जितकाम सहस्रधाम स्तोमैकसीम निखिलागमसंस्तुताङ्घ्रि ।  
भूमा त्वमेव शशिधामकलाललाम हृद्योमभूम भगवन् सततं नमस्ते ॥ ३८ ॥

अन्तकान्तक सदैव दान्तहृत्पद्मसद्मग महेश कृपाब्धे ।  
कान्त शान्त गिरिजावरकान्त वेदान्तवेद्य भवतान्तमवाद्य शम्भो ॥ ३९ ॥

इन्दुकुन्दधवलाङ्गमहोक्षापाङ्गसङ्गचरणाम्बुज पाहि ।  
शाङ्गलिङ्गकृतसङ्ग महाङ्गाशास्थलोकन हराव्यय पाहि ॥ ४५ ॥

गङ्गातुङ्गतरङ्गरङ्गितजटाजूटेन्दुखण्डोज्वल  
ज्वालाजालविलोचनोत्तम महाकाकोदराकल्पक ।  
लीलाचालितरङ्गितत्रिभुवनापारर्णवान्तःस्थित  
घोराशीविषनाधरङ्गितमहापादाम्बुजावाद्य माम् ॥

मुकुन्दनयनार्चितं पदयुगं प्रपन्नोऽस्मि ते  
सनन्दनसनातनकलितवन्दनं नन्दनम् ।  
हृदम्बुधितरङ्गकैः निखिलवेदवेद्यं सदा  
पदाम्बुजमरन्दपो भवतु मानसः षडदः ॥ ४७ ॥

कुलाचलकुमारिकाकुवतटीविहारादरं  
त्वदीयमधुना प्रभो मयि महाघटुःखैर्युते ।  
निधेहि यदि मानसं तदिह मुक्तिकान्तापति-  
र्भत्रामि भुवनेऽपि सन् कुरु दयां त्वदीये शिक्षौ ॥ ४८ ॥

विश्राणय श्रमहरामनवद्यदृष्टिं  
कष्टौघभेदनवोधौ विधिविष्णुवन्द्य ।  
आद्योत्तमोत्तम भिवग्वरचन्द्रचूड  
संसाररोगहर रुद्र रुजं विनाश्य ॥ ४९ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते शिवाख्ये देवैःकृता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । शिवाख्यः चतुर्थांशः । अध्यायः १४ । ३८-३९, ४५-४९ ॥

- .. shrIshivarahasyam . shivAkhyaH chaturthAMshaH . adhyAyaH 14 . 38-39, 45-49..

Notes: Devā-s देवाः eulogize Śiva शिव as He manifests out of the Śivaliṅga शिवलिङ्ग for protecting Mārkaṇḍeya मार्कण्डेय from Yama यम - the harbinger of death; and, grants the desired boon to Mārkaṇḍeya मार्कण्डेय.

Proofread by Ruma Dewan

---

*Devaihkrita Shiva Stuti*

pdf was typeset on August 20, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

